एडिसन, न्यू जर्सी
भारतीय संस्कृति वाला शहर

आलेख एवं फोटो: सेबास्तियन जॉन

इनडोर क्रिकेट, मंदिर, पान की दुकान, डोसा और बिरयानी के स्टाल, बिक्री के लिए सजी साड़ियां, अमेरिका का यह उपनगरीय इलाका किसी भारतीय शहर की तरह लगता है।

एडिसन, न्यू जर्सी में ओक ट्री रोड पर कार चलाना यूं ही है जैसे दिल्ली में लाजपत नगर मार्केट में घूमना– यद्यपि कुछ अहम भिन्नताओं के साथ। यहां साड़ियों की दुकानों, करीपत्ता बेचने वाली किराने की दुकानों और बॉलीवुड का संगीत बेचने वाली दुकानों की भरमार है...यहां तक कि दुकानों में सजे पुतलों के बाल तक वैसे ही प्लास्टिक के हैं। शाम के समय सड़कों पर काफी भीड़ होती है लेकिन यहां तहबज़ारी का चलन नहीं है। इसके अलावा कारें पार्क करने के लिए पर्याप्त जगह है और कारों के तेज़ हॉर्न भी कम ही सुनाई देते हैं।

यह ''लिटिल इंडिया'' है, अपने पूर्ववर्ती चाइना टाउनों और लिटिल इटली की ही तरह उस आप्रवासी संस्कृति की अभिव्यक्ति जो आखिर अमेरिका में अपने कदम जमा रही है। वर्ष 2000 की अमेरिकी जनगणना के आंकड़ों के अनुसार एडिसन के करीब एक लाख वासियों में करीब 17.5 फ़ीसदी भारतीय अमेरिकी हैं। यह अनुपात अन्य अमेरिकी कस्बों की अपेक्षा सबसे अधिक है और बढ़ ही रहा है। एडिसन के महापौर जुन चॉइ का अनुमान है कि अब कस्बे की एक तिहाई जनसंख्या भारतीय और भारतीय अमेरिकी हैं।

कस्बे के पुराने वासियों को 1980 के दशक की छोटी से किराने और वीडियो की दुकान का जमाना अभी भी याद है। और आज तो ओक ट्री रोड का भारतीय खंड करीब तीन किलोमीटर में फैला है, रितु बेरी जैसे ब्रांडों के डिज़ाइनर कपड़े बेचने वाला एक मॉल भी है। सभी जातियों और रंगों के ग्राहक चूड़ियां और हलाल गोश्त खरीदने यहां जुटते हैं।

एडिसन में भारतीय समूहों के जमावड़े का सबसे बड़ा कारण है एडिसन मेट्रो सेंटर स्टेशन से न्यू यॉर्क सिटी तक रेल से कुल चालीस मिनट में पहुंचने की सुविधा। सस्ते और बड़े मकानों के आकर्षण से बंधे भारतीय प्रवासी 1990 से लगातार यहां बसते रहे हैं।

बाएं: आइसेलिन, न्यू जर्सी में स्वामीनारायण मंदिर में बास्केटबॉल खेलते बच्चे।

ऊपर: हिल्सबॉरो, न्यू जर्सी में ड्रीमक्रिकेट के खेल स्थल पर क्रिकेट अभ्यास।

महेंद्र बोहरा और उनके दोस्त अपने खुद के ब्रांड का क्रिकेट सामान बेचते हैं।

शहर के बारे में जानकारी

एडिसन 83 वर्ग किलोमीटर में फैला है और आविष्कारक टॉमस अल्वा एडिसन की प्रयोगशाला के नगर के रूप में प्रसिद्ध है। यहीं उन्होंने प्रकाश बल्ब का आविष्कार और पहली साउंड रिकॉर्डिंग की। कस्बे की वेबसाइट (http://www.edisonnj.org) पर वहां के ''उत्कृष्ट पब्लिक स्कूलों, बीचोंबीच स्थित होना, फलते-फूलते व्यापार और विविधतापूर्ण समुदाय'' के बारे में बताया गया है जो इस कस्बे को रहने और काम करने के लिए एक शानदार जगह बनाते हैं। यहां 14,000 से कुछ कम छात्रों के लिए तीन पुस्तकालय और 17 विद्यालय हैं। कस्बे में पार्कों की कमी नहीं है- यहां 25 पार्क हैं और नगरपालिका की वेबसाइट पर ''फाइंड द परफ़ेक्ट पार्क'' पृष्ठ भी है।

राज्य के बारे में जानकारी

न्यू जर्सी अमेरिका के 13 मूल राज्यों में से एक है और यहीं के वासी फ्रांसिस हॉपकिन्स ने 13 सितारों और पट्टियों वाले पहले अमेरिकी झंडे का डिज़ाइन तैयार किया। प्रिंस्टन और रट्जर्स विश्वविद्यालय, नेवार्क इंटरनेशनल एयरपोर्ट और एटलांटिक सिटी मनोरंजन केंद्र इस राज्य के कुछ महत्वपूर्ण संस्थान हैं।

यहां भारत केंद्रित व्यवसाय फलफूल रहे हैं- यहां सिर्फ डोसा और चिकन टिक्का वाले रेस्तरां ही नहीं हैं। 48 किलोमीटर के दायरे में आप क्रिकेट बैट खरीद सकते हैं, बॉलीवुड शैली का नाच सीख सकते हैं और यहां तक कि शादी में पहनने लायक साड़ियां भी खरीद सकते हैं। इन्फोसिस, बिरला सॉफ़्ट और रैनबैक्सी जैसी बड़ी कम्पनियों के कार्यालय उस पैमाने की संपन्नता के संकेतक हैं जो ओक ट्री रोड पर तुरंत नहीं दिखती।

ट्रैवल एजेंसी के मालिक और भारतीय समुदाय के कार्यकर्ता प्रदीप कोठारी ने समुदाय की उस दौर से निकलने में सहायता की जब भारतीय अमेरिकी समुदाय के फलते-फूलते व्यावसायों के विरुद्ध स्थानीय पूर्वाग्रहों के चलते उनका नया कार्यालय आग के हवाले कर दिया गया था। अन्य व्यवसायों को भी क्षति पहुंची और समुदाय में डर फैल गया था। कोठारी को पता था कि कुछ तो करना ही होगा। 1970 के दशक में अमेरिका में आ बसे 61 वर्षीय कोठारी एडिसन उस दौर में पहुंचे जब झंझट शुरू ही हुए थे। वह कहते हैं, ''हम भी बाकी लोगों की ही तरह इस देश में पहुंचे हैं और अमेरिका में सुखी-संपन्न जीवन जीने का सपना देखते हैं।'' उन्होंने व्यापारियों को एकजुट करके रात में निगरानी का जो कार्यक्रम प्रारम्भ करवाया ,वह बाद में इतना सशक्त हो गया कि बदमाशों का पीछा करके उन्हें पुलिस के हवाले तक किया गया। समुदाय अपनी शिकायतों को अदालतों में ले जाने लगा और गुजरातियों के लिए एक लोकप्रिय नवरात्रि उत्सव की भी शुरूआत हुई जिसमें हर साल हज़ारों लोग शामिल होते हैं।

कोठारी कहते हैं कि कुछ तनाव तो अब भी हैं लेकिन वह मानते हैं कि कुल मिलाकर स्थानीय समुदाय ने भारतीयों को अपना लिया है। उदाहरण के लिए भारतीय अमेरिकी चिकित्सक डॉ. सुधांशु प्रसाद कस्बे की काउंसिल के सदस्य हैं, एक भारतीय अमेरिकी स्वामित्व वाली कम्पनी कैज़न टेक्नोलॉजीज़ को जिसके कार्यालय भारत और अमेरिका दोनों जगह हैं, एडिसन चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स ने इसी साल बिज़नेस ऑफ़ द इयर घोषित किया है।

कस्बे के महापौर चॉइ कहते हैं, ''भारतीय समुदाय एडिसन में विविधता लाया है। इसमें गणमान्य चिकित्सक और सूचना प्रौद्योगिकी और वित्त उद्योगों के कई अग्रणी नाम शामिल हैं। एडिसन में भारतीय अमेरिकियों की संख्या में तेज़ी से वृद्धि कुछ हद तक तो भारत और हमारे देश के बीच वैश्विक व्यापार के कारण हुई है। इससे एडिसन में प्रौद्योगिकी आधारित व्यवसाय आएंगे और हमारा अर्थतंत्र और भी समृद्ध होगा।''

कुमार बालानी पास के कस्बे ईस्ट ब्रन्सविक से *बिज़ इंडिया* नामक पत्रिका प्रकाशित करते हैं जो अमेरिका में भारतीय व्यापारियों की सफलता की कहानियों के साथ-साथ निवेश सम्बन्धी सलाह प्रस्तुत करती है। विज्ञापनदाताओं से विज्ञापन मांगते हुए बालानी जबर्दस्त आंकड़े प्रस्तुत करते हैं। उनके शोध के अनुसार एडिसन में भारतीयों की संख्या 2000 में 170,000 से बढ़कर 2007 में 270,000 हो गई है। इंडियन अमेरिकन सेंटर फॉर पोलिटिकल अवेयरनेस के अनुसार अमेरिका में लगभग 40 प्रतिशत भारतीय स्नातकोत्तर, डॉक्टरेट या प्रोफ़ेशनल उपाधियां से सम्पन्न हैं (यह संख्या राष्ट्रीय अनुपात से पांच गुणा है) और मेरिल लिंच द्वारा 2003 में किए गए एक अध्ययन के अनुसार अमेरिका में हर छब्बीसवां भारतीय करोड़पति है। बालानी बताते हैं कि गैर-भारतीय विज्ञापनदाता इन आंकड़ों को जानकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं, फिर हम उनसे पूछते हैं, ''क्या आप इस बाज़ार में प्रवेश करना चाहते हैं?'' 99 फ़ीसदी लोगों का हमें जवाब मिल जाता है।

ऊपर बाएं: एडिसन, न्यू जर्सी में एक भारतीय रेस्तरां।

मध्य बाएं: एडिसन में ओक ट्री रोड पर मामा पान शॉप में रावजी पटेल।

नीचे बाएं: ओक ट्री रोड के एक रेस्तरां में कबाब बनाता शेफ़।

ऊपर: शाम के समय ओक ट्री रोड पर घूमते भारतीय अमेरिकी।

दाएं: भारतीय अमेरिकी इलाके के केंद्रीय स्थल ओक ट्री रोड पर साड़ी की दुकान।

दाएं: न्यू ब्रंसविक, न्यू जर्सी के के-मार्ट डिपार्टमेंट स्टोर में कैशियर का काम करती लीलम्मा मैथ्यू। वह केरल से अमेरिका गईं आप्रवासी हैं।

वर्ष 2002 में पत्रिका की जहां 5000 प्रतियां ही छपती थीं, वहां आज पांच ही साल बाद अब 30,000 प्रतियां छपती हैं।

अन्य व्यवसाय भी फलफूल रहे हैं। 31 वर्षीय महेन्द्र बोहरा ड्रीमक्रिकेट के सह-संस्थापक हैं जो ब्राउन एंड विलिस ब्रांड की क्रिकेट सामग्री बेचने का काम बढ़ा रही है। वर्ष 2000 में न्यू यॉर्क राज्य की सिराक्यूज़ यूनिवर्सिटी से स्नातक उपाधि पाने के बाद बोहरा ने फैंटसी फुटबाल के अमेरिकी मनोरंजन से प्रेरणा लेकर ड्रीमक्रिकेट डॉट कॉम dreamcricket.com नाम से अपनी वेबसाइट शुरू की थी। इस खेल में वास्तविक खिलाड़ियों के प्रदर्शन के आधार पर दर्शक अपने पंसदीदा खिलाड़ियों को चुनकर एक फ़ैंटसी क्रिकेट मैच आयोजित करते हैं। इसी तर्ज़ पर उन्होंने फ़ैंटसी क्रिकेट मैच की शुरुआत की। लेकिन जल्दी ही बोहरा और उनके मित्रों को समझ में आ गया कि इस शौक को रोज़गार बनाया जा सकता है।

अब न्यू जर्सी के वासी एडिसन के पास हिल्सबॉरॉ में स्थित बोहरा और उनके मित्रों के स्टोर की इनडोर क्रिकेट पिच पर पूरे साल क्रिकेट खेल सकते हैं जहां आठ हज़ार डॉलर की स्वचालित पिचिंग मशीनें 25 प्रकार से अलग-अलग रफ़्तार और अलग-अलग ढंग से गेंदें फेंकती हैं। वर्ल्ड कप और अन्य प्रसिद्ध मैंचों के डीवीडी भी उपलब्ध हैं। बोहरा 1990 के दशक में विश्वविद्यालय की पढ़ाई के लिए मुंबई से अमेरिका आए थे। अब वह प्रिंस्टन, न्यू जर्सी से अपना व्यवसाय चलाते हैं। उनके क्रिकेट उत्पाद ऑनलाइन और न्यू जर्सी और फ्रेमॉंट स्थित स्टोरों पर भी उपलब्ध हैं। फिलहाल बोहरा और उनके साथी अपनी नौकरियां भी कर रहे हैं लेकिन वह मानते हैं कि अमेरिका का क्रिकेट से ज़्यादा परिचय हुआ नहीं कि उनका उद्यम पूर्णकालिक प्रतिबद्धता की मांग करेगा।

अतुल हुक्कू भी एडिसन क्रिकेट क्लब से ऐसी ही आशाएं लगाए हैं जो 2007 में राज्य क्रिकेट मैंचों के अंतिम दौर तक पहुंच गया था। 47 वर्षीय हुक्कू छुटपन में अमेरिका में रहे, फिर दुनियाभर के शहरों में रहने के बाद 1999 में अमेरिका लौटे और भारतीय, चीनी और दक्षिण कोरियाई कार्यक्रम दिखाने वाले इमैजिनेशियन टेलिविज़न नेटवर्क के लिए विज्ञापन बिक्री का काम करने लगे। हुक्कू पहले खुद भी क्रिकेट खेलते थे, अब नौकरी से बचे समय में क्लब का प्रबंधन संभालते हैं। उन्होंने एमिरेट्स एयरलाइन्स और किंगफिशर जैसे प्रायोजक जुटा लिए हैं। एमिरेट्स एयरलाइन्स धन उपलब्ध करवाती है और किंगफिशर मुफ़्त बीयर। हुक्कू हंसते हैं, ''हम ठंडी बीयर के घूंट भरकर खुशी मनाते हैं और गम भी गलत करते हैं।''

1994 में शुरू हुई न्यू जर्सी राज्य क्रिकेट लीग के सदस्यों की संख्या 32 से 44 हो चुकी है। प्रायोजक मिले तो हुक्कू बेहतर खिलाड़ी जुटा पाए और कस्बे के प्राधिकरण के सहयोग से अब उन्हें सही ढंग से क्रिकेट मैच खेल पाने के लिए एक काफी बड़ा मैदान उपलब्ध है।

क्षेत्र में दक्षिण एशियाइयों की अच्छी खासी जनसंख्या के चलते एडिसन के कुछ सिनेमा हॉल भारत-पाकिस्तान के बीच खेले गए क्रिकेट मैचों की फ़िल्में तक दिखाते हैं लेकिन हुक्कू जानते हैं कि क्रिकेट में औसत अमेरिकियों की रुचि जगाना टेढ़ी खीर ही साबित होगा। गैर-भारतीय लोग मैच तो नहीं देखते लेकिन खेल देखने के लिए रुकते हैं और प्रश्न भी पूछते हैं। हुक्कू कहते हैं, ''अमेरिकी समझ नहीं पाते कि एक खेल में 6-7 घंटे कैसे बिताए जा सकते हैं।'' वैसे उन्हें लगता है कि कम समय में खेले जा सकने वाले 20-20 ओवर वाले मैच अमेरिकियों को पसंद आ सकते हैं।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

एडिसन

http://www.edisonnj.org/

न्यू जर्सी

http://www.state.nj.us/

ऊपर: जगदीश सदाना (बाएं) और पद्मा खन्ना एडिसन, न्यू जर्सी के इंडियानिका डांस स्कूल में।

दाएं: पद्मा खन्ना और उनके विद्यार्थी डांस स्कूल में अभ्यास करते हुए।

नीचे: ईस्ट ब्रंसविक, न्यू जर्सी में अपने बिज़ इंडिया समाचार पत्र कार्यालय में कुमार बालानी।

नीचे दाएं: ईस्ट ब्रंसविक में एक बॉलीवुड कार्यक्रम का आयोजन।

आइसेलिन स्थित एडिसन स्वामीनारायण मंदिर के स्वंयसेवकों को उत्सुक लोगों की जिज्ञासा शांत करने का अच्छा-खासा अभ्यास है। स्थानीय अस्पतालों के लिए धन जुटाने के लिए आयोजित वार्षिक उत्सव और दीपावली के दौरान गैर-हिन्दू, गैर-अमेरिकी अतिथि हिन्दू आस्थाओं और विश्वासों के बारे में काफी जानकारियां चाहते हैं। स्थानीय अस्पतालों के लिए धन जुटाने के लिए स्वयंसेवक प्राप्त दान के एवज में एक निश्चित दूरी तक पदयात्रा करने की शपथ लेते हैं। वकील सिद्धार्थ डुबाल बताते हैं, ''इन आयोजनों से हमें और समुदाय को एक-दूसरे को जानने और समझने में सहायता मिलती है।''

रट्जर्स यूनिवर्सिटी की हिन्दू स्टूडेंट काउंसिल के अगुआ के रूप में कॉलेज में पहले वर्ष के छात्र विनय लिम्बाचिया को पुनर्जन्म जैसे विषयों पर बात

करने की नौबत आ जाती है। वह कहते हैं, ''कुछ गलतफहमियां हैं लेकिन उनकी संख्या बहुत ही कम है।'' हाल ही में उन्होंने परिसर में बहुदेववाद बनाम एकदेववाद पर परिचर्चा आयोजित की। विनय लिम्बाचिया किशोर आयु से ही मन्दिर में आयोजित होने वाली धर्म और गुजराती भाषा की कक्षाओं में पढ़ते रहे हैं और इस अनुभव के बारे में वह मानते हैं, ''मैं एक चैतन्य मनुष्य बना। मुझे आभास हो गया कि मैं एक बहुत बड़े आयोजन का हिस्सा हूं।'' वह कहते हैं, ''मुझे गर्व है कि अब मैं अपना नाम गुजराती में लिख सकता हूं।'' वह पाते हैं कि दूसरी और तीसरी पीढ़ी के भारतीय अमेरिकियों का मन्दिर से जुड़ना बढ़ रहा है। उनका अरमान कभी भारत लौटना है और इसके लिए वह गुजराती के अभ्यास में जुटे हैं।

अमेरिका में लघु भारत

अमेरिका में ''लिट्ल इंडिया'' के नाम से जाने जाने वाले अन्य भारतीय बहुल कस्बे हैं : न्यू जर्सी में जर्सी सिटी, न्यू यॉर्क सिटी में जैक्सन हाइट्स, सैन फ्रांसिस्को के पास बर्कले में, कैलिफ़ोर्निया में लॉस एंजिलिस के दक्षिण की ओर स्थित आर्टेजिया, इलिनॉय में डेवॅन एवेन्यू और हूस्टन, टेक्सस में।

__सेबास्तियन जॉन__ भारतीय लेखक और छायाकार हैं और वाशिंगटन, डी.सी. में रहते हैं।

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।